

UGC NET Paper 1 2011 June

www.Fillerform.info

Previous Years Solved Questions - UGC NET Paper 1 for July 201

Unit 3(Home work)Hindi/Eng-29

Philosophy of Education is a label applied to the study of the purpose, process, nature and ideals of education. It can be considered a branch of both philosophy and education. Education can be defined as the teaching and learning of specific skills, and the imparting of knowledge, judgment and wisdom, and is something broader than the societal institution of education we often speak of.

Many educationalists consider it a weak and woolly field, too far removed from the practical applications of the real world to be useful. But philosophers dating back to Plato and the Ancient Greeks have given the area much thought and emphasis, and there is little doubt that their work has helped shape the practice of education over the millennia.

Plato is the earliest important educational thinker, and education is an essential element in "The Republic" (his most important work on philosophy and political theory, written around 360 B.C.). In it, he advocates some rather extreme methods: removing children from their mothers' care and raising them as wards of the state, and differentiating children suitable to the various castes, the highest receiving the most education, so that they could act as guardians of the city and care for the less able. He believed that education should be holistic, including facts, skills, physical discipline, music and art. Plato believed that talent and intelligence is not distributed genetically and thus is be found in children born to all classes, although his proposed system of selective public education for an educated minority of the population does not really follow a democratic model.

Aristotle considered human nature, habit and reason to be equally important forces to be cultivated in education, the ultimate aim of which should be to produce good and virtuous citizens. He proposed that teachers lead their students systematically, and that repetition be used as a key tool to develop good habits, unlike Socrates' emphasis on questioning his listeners to bring out their own ideas. He emphasized the balancing of the theoretical and practical aspects of subjects taught, among which he explicitly mentions reading, writing,

mathematics, music, physical education, literature, history, and a wide range of sciences, as well as play, which he also considered important.

During the Medieval period, the idea of Perennialism was first formulated by St. Thomas Aquinas in his work "De Magistro". Perennialism holds that one should teach those things deemed to be of everlasting importance to all people everywhere, namely principles and reasoning, not just facts (which are apt to change over time), and that one should teach first about people, not machines or techniques. It was originally religious in nature, and it was only much later that a theory of secular perennialism developed.

During the Renaissance, the French skeptic Michel de Montaigne (1533 - 1592) was one of the first to critically look at education. Unusually for his time, Montaigne was willing to question the conventional wisdom of the period, calling into question the whole edifice of the educational system, and the implicit assumption that university-educated philosophers were necessarily wiser than uneducated farm workers, for example.

Q1. What is the difference between the approaches of Socrates and Aristotle?

- 1) Aristotle felt the need for repetition to develop good habits in students; Socrates felt that students need to be constantly questioned
- 2) Aristotle felt the need for rote-learning; Socrates emphasized on dialogic learning
- 3) There was no difference
- 4) Aristotle emphasized on the importance of paying attention to human nature; Socrates emphasized upon science

Ans1

Q2. Why do educationists consider philosophy a 'weak and woolly' field?

- 1) It is not practically applicable
- 2) Its theoretical concepts are easily understood
- 3) It is irrelevant for education
- 4) None of the above

Ans2.

Q3. What do you understand by the term 'Perennialism', in the context of the given comprehension passage?

- 1) It refers to something which is of ceaseless importance
- 2) It refers to something which is quite unnecessary
- 3) It refers to something which is abstract and theoretical
- 4) It refers to something which existed in the past and no longer exists now

Ans3.

Q4. Were Plato's beliefs about education democratic?

- 1) He believed that only the rich have the right to acquire education
- 2) Yes
- 3) He believed that only a select few are meant to attend schools
- 4) He believed that all pupils are not talented

Ans4.

Q5. Why did Aquinas propose a model of education which did not lay much emphasis on facts?

- 1) Facts are not important
- 2) Facts do not lead to holistic education
- 3) Facts change with the changing times
- 4) Facts are frozen in time

Ans5.

.....

शिक्षा का दर्शन शिक्षा के उद्देश्य, प्रक्रिया, प्रकृति और आदर्शों के अध्ययन के लिए लागू एक लेबल है। इसे दर्शन और शिक्षा दोनों की एक शाखा माना जा सकता है। शिक्षा को विशिष्ट कौशल के शिक्षण और सीखने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, और ज्ञान, निर्णय और ज्ञान प्रदान करना, और शिक्षा की सामाजिक संस्था की तुलना में कुछ व्यापक है जिसे हम अक्सर बोलते हैं।

कई शिक्षाविद इसे एक कमजोर और ऊनी क्षेत्र मानते हैं, जो उपयोगी होने के लिए वास्तविक दुनिया के व्यावहारिक अनुप्रयोगों से बहुत दूर है। लेकिन प्लेटो और प्राचीन यूनानियों से डेटिंग करने वाले दार्शनिकों ने इस क्षेत्र को बहुत सोचा और जोर दिया है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनके काम ने सहस्राब्दी से शिक्षा के अभ्यास को आकार देने में मदद की है।

प्लेटो सबसे प्रारंभिक महत्वपूर्ण शैक्षिक विचारक है, और शिक्षा "द रिपब्लिक" में एक आवश्यक तत्व है (दर्शन और राजनीतिक सिद्धांत पर उनका सबसे महत्वपूर्ण काम, लगभग ३६० ईसा पूर्व लिखा गया था)। इसमें, वह कुछ अतिवादी तरीकों की वकालत करते हैं: बच्चों को उनकी माताओं की देखभाल से हटाना और उन्हें राज्य के वार्ड के रूप में पालना, और विभिन्न जातियों के लिए उपयुक्त बच्चों को अलग करना, सबसे अधिक शिक्षा प्राप्त करना, ताकि वे अभिभावक के रूप में कार्य कर सकें कम सक्षम के लिए शहर और देखभाल। उनका मानना था कि शिक्षा समग्र होनी चाहिए, जिसमें तथ्य, कौशल, शारीरिक अनुशासन, संगीत और कला शामिल हो। प्लेटो का मानना था कि प्रतिभा और बुद्धि आनुवंशिक रूप से वितरित नहीं होती है और इस प्रकार सभी वर्गों में पैदा हुए बच्चों में पाई जाती है, हालांकि आबादी के शिक्षित अल्पसंख्यक के लिए चुनिंदा सार्वजनिक शिक्षा की उनकी प्रस्तावित प्रणाली वास्तव में लोकतांत्रिक मॉडल का पालन नहीं करती है।

अरस्तू ने मानव स्वभाव, आदत और कारण को शिक्षा में विकसित करने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण शक्ति माना, जिसका अंतिम उद्देश्य अच्छे और गुणी नागरिक पैदा करना होना चाहिए। उन्होंने प्रस्तावित किया कि शिक्षक अपने छात्रों को व्यवस्थित रूप से नेतृत्व करते हैं, और उस दोहराव को अच्छी आदतों को विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, सुकरात के अपने श्रोताओं से अपने विचारों को बाहर लाने के लिए सवाल करने पर जोर देने के विपरीत। उन्होंने पढ़ाए जाने वाले विषयों के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं के संतुलन पर जोर दिया, जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से पढ़ने, लिखने, गणित, संगीत, शारीरिक शिक्षा, साहित्य, इतिहास और विज्ञान की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ-साथ खेल का भी उल्लेख किया, जिसे उन्होंने भी माना। जरूरी।

मध्ययुगीन काल के दौरान, बारहमासीवाद का विचार सबसे पहले सेंट थॉमस एक्विनास ने अपने काम "डी मैजिस्ट्रो" में तैयार किया था। बारहमासीवाद का मानना है कि किसी को उन चीजों को पढ़ाना चाहिए जो हर जगह सभी लोगों को हमेशा के लिए महत्व की समझी जाती हैं, अर्थात् सिद्धांत और तर्क, न कि केवल तथ्य (जो समय के साथ बदलने के लिए उपयुक्त हैं), और यह कि किसी को पहले लोगों के बारे में पढ़ाना चाहिए, न कि मशीनों या तकनीकों के बारे में। यह मूल रूप से प्रकृति में धार्मिक था, और यह बहुत बाद में था कि धर्मनिरपेक्ष बारहमासीवाद का सिद्धांत विकसित हुआ।

पुनर्जागरण के दौरान, फ्रांसीसी संशयवादी मिशेल डी मॉन्टेन (1533 - 1592) शिक्षा पर गंभीर रूप से देखने वाले पहले लोगों में से एक थे। अपने समय के लिए असामान्य रूप से, मॉन्टेगने इस अवधि के पारंपरिक ज्ञान पर सवाल उठाने के लिए तैयार थे, शिक्षा प्रणाली के पूरे भवन पर सवाल उठाते हुए, और यह निहित धारणा कि विश्वविद्यालय-शिक्षित दार्शनिक अनिवार्य रूप से अशिक्षित खेत श्रमिकों की तुलना में बुद्धिमान थे, उदाहरण के लिए।

Q1. सुकरात और अरस्तू के दृष्टिकोणों में क्या अंतर है?

- 1) अरस्तू ने विद्यार्थियों में अच्छी आदतें विकसित करने के लिए दोहराव की आवश्यकता महसूस की; सुकरात ने महसूस किया कि छात्रों से लगातार पूछताछ की जरूरत है
- 2) अरस्तू ने रटने-लर्निंग की आवश्यकता महसूस की; सुकरात ने संवाद सीखने पर जोर दिया
- 3) कोई अंतर नहीं था
- 4) अरस्तू ने मानव स्वभाव पर ध्यान देने के महत्व पर जोर दिया; सुकरात ने विज्ञान पर जोर दिया

उत्तर 1.

Q2. शिक्षाविद दर्शन को कमजोर और ऊनी क्षेत्र क्यों मानते हैं?

- 1) यह व्यावहारिक रूप से लागू नहीं है
- 2) इसकी सैद्धांतिक अवधारणाओं को आसानी से समझा जा सकता है
- 3) यह शिक्षा के लिए अप्रासंगिक है
- 4) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर 2.

Q3. दिए गए बोधगम्य परिच्छेद के संदर्भ में, बारहमासीवाद शब्द से आप क्या समझते हैं?

- 1) यह किसी ऐसी चीज को संदर्भित करता है जो निरंतर महत्व की है
- 2) यह किसी ऐसी चीज को संदर्भित करता है जो काफी अनावश्यक है
- 3) यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जो अमूर्त और सैद्धांतिक है
- 4) यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जो अतीत में मौजूद थी और अब मौजूद नहीं है

उत्तर 3.

Q4. क्या शिक्षा के बारे में प्लेटो के विश्वास लोकतांत्रिक थे?

१) उनका मानना था कि शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल अमीरों को है

२) हाँ

३) उनका मानना था कि केवल कुछ चुनिंदा लोग ही स्कूलों में जाने के लिए होते हैं

४) उनका मानना था कि सभी छात्र प्रतिभाशाली नहीं होते हैं

उत्तर4.